साप्ताहिक

बुलंद गोंदिया

खबरों का आईना

प्रधान संपादक : **अभिषेक चौहान** । संपादक : **नवीन अग्रवाल**

E-mail : **bulandgondia@gmail.com** | E-paper : **bulandgondia.net** | Office Contact No.: **7670079009** | R. No.: **MAH-HIN-10169**

वर्ष : 2 | अंक : 10 — गोंदिया : गुरुवार, 14 से 20 अक्टूबर 2021 — ■ पृष्ठ : 4 ■ मूल्य : रु. 5

अर्जुनी मोरगांव की स्टेट बैंक में १ वर्ष से नहीं बन रही डीडी

विद्यार्थियों को हो रही परेशानी, बैंक में नहीं है डीडी के कागज

संतोष रोकड़े – अर्जुनी मोरगांव की स्टेट बैंक शाखा में गत १ वर्ष से डीडी नहीं बन पा रही है। जिससे व्यापारियों व विद्यार्थियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। डीडी के लिए लगने वाले दस्तावेज बैंक में उपलब्ध ही नहीं है।

गौरतलब है कि अनेक कार्य तथा विभिन्न शैक्षणिक दस्तावेज तैयार करने के लिए नागरिकों व विद्यार्थियों राष्ट्रीयकृत बैंकों में जाते हैं। किंतु अर्जुनी मोरगांव की भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में गत १ वर्ष से डीडी नहीं बन पा रहे है। इसके साथ ही किसी कार्य से बैंक में जाने पर सुरक्षाकर्मियों द्वारा बैंक में प्रवेश नहीं दिया जाता। साथ ही डीडी के संदर्भ में पूछताछ किए जाने पर बताया गया कि कागज नहीं है। छपाई नहीं हो रही है तथा ऐसे गोलमाल जवाब देकर नागरिकों को परेशान किया जा रहा है। इस के साथ ही उपरोक्त शाखा में ग्राहकों व नागरिकों को नियमित सेवा भी बैंक द्वारा नहीं दी जा रही है। विद्यार्थियों के कार्य न कर कुछ व्यापारियों के कार्य समयावधि समाप्त होने के बाद भी बैंक द्वारा किये जा रहे हैं। जिससे सामान्य नागरिकों के अधिकारों का हनन व विद्यार्थियों के शैक्षणिक नुकसान का कार्य बैंक द्वारा किया जा रहा है। जिसके चलते परिसर के नागरिकों व विद्यार्थियों द्वारा बैंक की इस लापरवाही के खिलाफ जांच कर कार्रवाई की मांग की है।

इस मामले में येरंडी के विद्यार्थी एम.आर. नंदागवली ने जानकारी देते हुए बताया कि शैक्षणिक कार्यों के लिए, दस्तावेजों की जांच के लिए डीडी बनवाना पड़ता है। किंतु डीडी बनवाने के लिए बैंक में जाने पर सुरक्षाकर्मी द्वारा वापस करने के साथ ही डीडी नहीं बनेगी ऐसी जानकारी दी जाती है।

खैरी के नागरिक वी.आर. राऊत ने जानकारी दी कि बैंक में डीडी व अन्य कार्यों के लिए जाने पर सुरक्षाकर्मी द्वारा बाहर से ही भगा दिया जाता है तथा अंदर जाकर किसी भी बैंक के कार्यों के संदर्भ में पूछताछ करने नहीं दी जाती तथा कर्मचारियों द्वारा परेशान किया जाता है।

नंगपुरा मुर्री से चुटिया रोड पर ट्रैफिक पुलिस व पीडब्ल्यूडी को समस्याओं के समाधान के लिए विधायक अग्रवाल ने दिए निर्देश

समस्याओं को लेकर नागरिकों ने किया था रास्ता रोको आंदोलन

गोंदिया तहसील के मुर्री से चुटिया मार्ग पर बड़े वाहनों का आवागमन बड़े पैमाने पर होता है, जिससे आम नागरिको, किसान और विद्यार्थियों के जीवन की हानि होने की संभावना बनी रहती है। मार्ग के समीप में एफसीआय के बड़े गोडाउन और लगभग २० राईस मिल होने के वजह से भी ट्राफिक की समस्या मार्ग पर बनी रहती है। जिसके कारण नंगपुरा मुर्री, संजय नगर, चुटिया और पांगडी तक जानेवाले राहगीरों को अनेक समस्याओ का सामना करना पड़ता है। इसके लिए सभी ग्रामवासियों ने मार्ग पर आकर मुर्री से चुटिया तक सड़क का चौड़ीकरण, सड़क के सीमेंट कंक्रीट का निर्माण, रात ९ बजे से सुबह ९ बजे तक सड़क निर्माण पूरा होने तक पानी के वाहनों का प्रवेश, सड़क के पास धर्मकाटा का पंजीकरण रद्द किया जाए। मुर्री वेस्ट बाइपास पर भारी वाहनों की पार्किंग और मुर्री वेस्ट बाइपास पर ट्रैफिक बैरिकेड्स लगाने की मांग को लेकर रास्ता रोको आंदोलन किया गया था। रास्ता रोको आंदोलन के दौरान विधायक विनोद अग्रवाल ने दौरा कर यातायात पुलिस व पीडब्ल्यूडी अधिकारियों को नागरिकों की मांगों के अनुरुप सड़क यातायात की समस्या का समाधान करने का निर्देश दिया। रास्ता रोको आंदोलन वापस ले लिया गया।

इस आंदोलन में शैलजा सोनवाने पूर्व सभापती जी.प.गोंदिया, दीपा चंद्रिकापुरे, ओमप्रकाश रहांगडाले सरपंच मुर्री, मोहन गौतम, कैलाश गजभिये, तीर्थराज रहांगडाले उपसरपंच, दिनेश मेश्राम उपसरपंच पिंडकेपार, अजित टेंभरे उपसरपंच चुटिया, कमलेश सोनवाने, संदीप टेंभेकर ग्रा.प.सदस्य मुर्री, राजकुमार टेकाम ग्रा.प.सदस्य, राजेश कोल्हे ग्रा.प.सदस्य मुर्री, शालीक रक्से ग्रा.प. सदस्य पिंडकेपार, राधेश्याम शरणागत, सुमित टेंभुर्णे, ग्रा.प.सदस्य, पुजा बिजेवार ग्रा.प.सदस्य, पुष्पा शरणागत ग्रा.प.सदस्य, मीना टालते, मीना सूर्यवंशी, जामती बेदी, मीना डोमळे, कुंदा रिनायत, सूरज दास, विक्की कावडे, कपिल राने व अन्य ग्रामवासी उपस्थित थे।

बोंडगांवदेवी मार्ग पर रात में तेंदुए का आतंक

वीडियो वायरल, परिसर के नागरिकों में दहशत का वातावरण

संवाददाता – अर्जुनी मोरगांव तहसील के अंतर्गत आनेवाले साकोली मार्ग पर बोंडगांव से नीमगांव मार्ग पर रात के दौरान दो तेंदुए का विचरण होने से उनका आतंक परिसर में फैल चुका है तथा दोनों तेंदुए का वीडियो कुछ नागरिकों द्वारा बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल किया गया है। जिसके चलते परिसर के नागरिकों में दहशत का वातावरण निर्माण हो गया है।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त क्षेत्र में तेंदुए की संख्या में काफी बढ़ोतरी हो रही है। जिससे इसके सुरक्षा के इंतजाम वन विभाग से किए जाने की मांग नागरिकों द्वारा की गई है। विशेष यह है कि अर्जुनी मोरगांव तहसील यह क्षेत्र नवेगांव नागझिरा वन्य जीव संरक्षण के लिए बफर जोन घोषित किया गया है। जिसके चलते तहसील के वनों में वन्य प्राणियों की संख्या दिनों दिन तेजी से बढ़ रही है। जंगल परिसर से लगे तहसील के अनेक ग्राम है। जिसके परिणाम स्वरुप आए दिन वन्यजीव व मानव संघर्ष दिखाई देता है। हाल ही में एक तेंदुए द्वारा ग्राम चान्ना निवासी ३२ वर्षीय किसान पर हमला कर गंभीर रुप से जख्मी कर दिया था। इसके अलावा भी कुछ दिनों में इस प्रकार के हमले होने पर अनेक नागरिक वन्यजीवों के हमले का शिकार हो चुके हैं। जिसके चलते वन विभाग द्वारा परिसर में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए जाने की मांग उठ रही है ।

राशन के लाभार्थियों की अनाज वितरण की सूची ग्रापं में लगाने के विधायक अग्रवाल ने दिए निर्देश

गोंदिया – हाल ही में गोंदिया के विधायक विनोद अग्रवाल ने शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों से प्राप्त राशनकार्डधारकों को अनाज नही मिलने, अनाज वितरण में दुजाभाव करने, अधिक पैसे वसूलने, संजय गांधी निराधार योजना, इंदिरा गांधी निराधार (विधवा) योजना एवं श्रावण बाल योजना के लाभार्थियों को लाभ नही मिलने पर सभा का आयोजन तहसील कार्यालय में किया था।

विधायक विनोद अग्रवाल ने शासन योजना के तहत लाभार्थियों को मिलने वाले अनाज को लेकर नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने कहा, राशन दुकानदार लाभार्थियों को अनाज वितरण में दुजाभाव कर रहे है, वही अनाज के अधिक दर भी वसूल कर रहे है व उन्हें रसीद नही दी जाती। उन्होंने कहा, शासन की योजना है कि प्रत्येक गरीब व जरुरतमंद व्यक्ति को अनाज मिले, पर प्रशासनस्तर पर ध्यान केन्द्रित नही किये जाने पर व्यवस्था असंतुलित हो रही है।

लाभार्थियों को तय दरों में प्रमाण के तौर पर अनाज वितरण होना चाहिए। उन्हें रसीद दी जानी चाहिये। अधिक पैसे वसूल करने वालों पर कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने ये भी कहा कि जिन लोगो ने राशन नही उठाया उन लोगो के नाम काटे जाने का कार्य जारी है जो कि गलत है। ऐसे लाभार्थियों की जानकारी ली जानी चाहिए एवं उन्हें ६ माह की मोहलत दी जानी चाहिए। राशन वितरण पर सकारात्मकता लाने हेतु अधिकारियों को कड़े निर्देश दिए कि सभी ग्राम पंचायत में अनाज का लाभ उठाने वाले लाभार्थियों की एवं अनाज का निश्चित कोटा की सूची ग्राम पंचायत में लगाई जाए।

संजय गांधी निराधार योजना, इंदिरा गांधी निराधार (विधवा) योजना एवं श्रावण बाल योजना के लाभार्थियों को सहयोग राशि प्राप्त नहीं होने की शिकायत आ रही है। वही नये लाभार्थियों को योजना से वंचित रखने का कार्य किया जा रहा है। नए लोगो के आनेवाले आवेदनों पर प्रक्रिया पूर्ण कर उन्हें योजना का लाभ मिलना चाहिए, साथ ही योजना की विलंब हो रही राशि त्वरित प्रदान करने के निर्देश दिए। इस सभा में जिला अन्न आपूर्ति अधिकारी सवई, तहसीलदार आदेश डफल, नायब तहसीलदार पालान्दुरकर, नायब तहसीलदार पाटने, फूड निरीक्षक भारती वाकुड़े, फूड विभाग के शिंदे सहित अनेक अधिकारी उपस्थित थे।

डॉ. मकवाना व किक बॉक्सिंग खिलाड़ियों का सत्कार

गोंदिया जिला क्रीड़ा संकुल मे जी-९ चैंपियन स्पोर्ट्स अकादमी व शिव छत्रपति बहुउद्देशिय संस्था, गोंदिया द्वारा स्पोर्ट्स मे आचार्य पदवी प्राप्त करने पर डॉ. आनंद मकवाना का सत्कार किया गया। जिसमे प्रमुख रुप से नाजुक उइके राज्य क्रीड़ा मार्गदर्शक, अनिल सहारे क्रीड़ा मार्गदर्शक, कृतूराज यादव संस्थाध्यक्ष युवा एकता क्रीड़ा संस्था, अंकुश गजभिये तलवार बाजी प्रमुख प्रशिक्षक मंच पर आसीन थे।

इन सभी अतिथियों का सत्कार सेंसई रविना बरेले, विनेश फुंडे, सेंसई विजय गिरी, फनेन्द्र सर, याशिका परमार राष्ट्रीय खिलाडी ने किया। तिरोड़ा शहर मे आयोजित जिला स्तरीय किक बॉक्सिंग इवेंट पॉइंट फाइट और लाइट कॉन्टेक्ट मे गोंदिया जिला क्रीड़ा संकुल के खिलाड़ियों द्वारा जिसमे गोल्ड मेडल सांझी ठाकुर, यशिका परमार, तन्वी पटेल, एकविरा कोसरे, सिल्वर मेडल धनश्री श्रीरामे, आर्ची तिड़के, अन्वी वासनिक, फाल्गुनी ढेगे, वंशिका मेश्राम, ब्रॉन्ज मेडल चेतना ठाकुर, अंजलि बघेले, सारा सूर्यवंशी द्वारा विजय हासिल होने पर मेडल देकर सभी खिलाड़ियों का सत्कार किया गया।

आभार प्रदर्शन राष्ट्रवादी खेल संघटना जिलाअध्यक्ष सेंसई विशालसिंग ठाकुर व अंकुश गजभिये द्वारा किया गया।

युपीएससी साक्षरता सेमिनार सम्पन्न

गोंदिया – समाज के अधिक से अधिक विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं के द्वारा प्रशासकीय पद प्राप्त कर सके, इसके लिए विश्व सिंधी सेवा संघ, युवा विंग, गोंदिया द्वारा १० अक्टुबर को यूपीएससी कोर्स से संबंधित साक्षरता सेमिनार पूज्य सिंधी मनिहारी धर्मशाला में सम्पन किया गया।

इस सेमिनार में नागपुर की उदय एकडेमी से घनश्यामदास कुकरेजा, डॉ. वंदना खुशलानी, प्रताप देवानी, राजेश बटवानी विशेषज्ञ वक्ता के रुप में उपस्थित थे। उन्होंने विद्यार्थियों को कोर्स से संबंधित पूरी जानकारी प्रदान की। विशेष अतिथि के रुप में सिंधी जनरल पंचायत के अध्यक्ष नारायन चंदवानी, पूज्य सिंधी मनिहारी धर्मशाला के अध्यक्ष राजकुमार नोतानी, शिक्षिका तमन्ना मतलानी मंच पर उपस्थित थे।

विशेषज्ञ वक्ताओं द्वारा प्रशासनिक परीक्षा के फॉरमेट की पूरी जानकारी देते हुए विद्यार्थियों से रुबरु होकर चर्चा की गई। जिससे विद्यार्थियों द्वारा विषय से संबंधित अपनी समस्याओं को निसंकोच मंच पर बैठे वक्ताओ के समक्ष रखी और जिससे उनका समाधान तत्परता से प्राप्त हुआ। तमन्ना मतलानी ने भी अपने ज्ञान व बात करने की शैली से विद्यार्थियों को मंत्रमुग्ध किया व उनके मन में भविष्य में प्रशासनिक परीक्षा को पास करने की इच्छा जागृत की।

इस आयोजन में संस्था के संस्थापक व पूर्व अध्यक्ष विनोद चांदवानी (गड्डु), अध्यक्ष धरम खटवानी, सचिव दीपक कुकरेजा, उपाध्यक्ष सीए सुनील चावला, उपाध्यक्ष सुनील मोटवानी, कोषाध्यक्ष अजय गोपलानी, संजय तेजवानी, श्याम वाधवानी, प्रकाश कोडवानी, प्रदीप कोडवानी, कुणाल वाधवानी, सिद्धार्थ गोपलानी, सुमित गोपलानी, विक्की खटवानी, सुनील सम्भवानी, जयदेव तोलानी, मनीषराय मुक्ता, हरीश खत्री, राम लालवानी, अनिल गंबानी, नरेश लालवानी, सुखदेव रामानी, श्रीमती सपना आहूजा, श्रीमती पूजा तनवानी, श्रीमती विधी कुकरेजा, श्रीमती दया खटवानी व धर्मशाला कार्यकारिणी का इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा।

मंच संचालन संस्था उपाध्यक्ष सुनील मोटवानी द्वारा किया गया एवं आये हुए सभी वक्ताओ और अतिथियों का आभार प्रदर्शन सचिव दीपक कुकरेजा द्वारा किया गया।

नवदुर्गा

नवदुर्गा हिन्दू धर्म में माता दुर्गा अथवा माता पार्वती के नौ रुपों को एक साथ कहा जाता है। इन नवों दुर्गा को पापों की विनाशिनी कहा जाता है, हर देवी के अलग अलग वाहन हैं, अस्त्र शस्त्र हैं परन्तु यह सब एक हैं। दुर्गा सप्तशती ग्रन्थ के अन्तर्गत देवी कवच स्तोत्र में निम्नांकित श्लोक में नवदुर्गा के नाम क्रमश: दिये गए हैं-

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रम्हचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुगार्ः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रम्हणैव महात्मना॥

देवी दुर्गा के नौ रुप होते हैं जिन्हें नवदुर्गा कहा जाता है।

शैलपुत्री :--------------------

दुर्गाजी पहले स्वरुप में **शैलपुत्री** के नाम से जानी जाती हैं। ये ही नवदुर्गाओं में प्रथम दुर्गा हैं। पर्वतराज हिमालय के घर पुत्री रुप में उत्पन्न होने के कारण इनका नाम शैलपुत्री पड़ा। नवरात्र पूजन में प्रथम दिवस इन्हीं की पूजा और उपासना की जाती है। इनका वाहन **वृषभ** है, इसलिए यह देवी **वृषारुढ़ा** के नाम से भी जानी जाती हैं। इस देवी ने दाएँ हाथ में त्रिशूल धारण कर रखा है और बाएँ हाथ में कमल सुशोभित है। यही सती के नाम से भी जानी जाती हैं।

मन्त्र : वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारुढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्॥

एक बार जब सती के पिता प्रजापति दक्ष ने यज्ञ किया तो इसमें सारे देवताओं को निमंत्रित किया, पर अपने दामाद भगवान शंकर को नहीं। सती अपने पिता के यज्ञ में जाने के लिए विकल हो उठीं। शंकरजी ने कहा कि सारे देवताओं को निमंत्रित किया गया है, उन्हें नहीं। ऐसे में वहाँ जाना उचित नहीं है। परन्तु सती सन्तुष्ट नहीं हुईं।

सती का प्रबल आग्रह देखकर शंकरजी ने उन्हें यज्ञ में जाने की अनुमति दे दी। सती जब घर पहुँचीं तो सिर्फ माँ ने ही उन्हें स्नेह दिया। बहनों की बातों में व्यंग्य और उपहास के भाव थे। भगवान शंकर के प्रति भी तिरस्कार का भाव था। दक्ष ने भी उनके प्रति अपमानजनक वचन कहे। इससे सती को क्लेश पहुँचा। वे अपने पति का यह अपमान न सह सकीं और योगाग्नि द्वारा अपनेआप को जलाकर भस्म कर लिया।

इस दारुण दुख से व्यथित होकर शंकर भगवान ने ताण्डव करते हुये उस यज्ञ का विध्वंस करा दिया। यही सती अगले जन्म में शैलराज हिमालय की पुत्री के रुप में जन्मी और शैलपुत्री कहलाईं। शैलपुत्री का विवाह भी फिर से भगवान शंकर से हुआ। शैलपुत्री शिव की अर्द्धांगिनी बनीं। इनका महत्व और शक्ति अनन्त है।

अन्य नाम : सती, पार्वती, वृषारुढ़ा, हेमवती और भवानी भी इन्ही देवी के अन्य नाम हैं।

ब्रम्हचारिणी :------------------

नवरात्र पर्व के दूसरे दिन माँ ब्रम्हचारिणी की पूजा-अर्चना की जाती है। साधक इस दिन अपने मन को माँ के चरणों में लगाते हैं। ब्रम्ह का अर्थ है तपस्या और चारिणी यानी आचरण करने वाली। इस प्रकार ब्रम्हचारिणी का अर्थ हुआ तप का आचरण करने वाली।

भगवान शंकर को पति रुप में प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की थी। इस कठिन तपस्या के कारण इस देवी को तपश्चारिणी अर्थात ब्रम्हचारिणी नाम से अभिहित किया।

कहते है माँ ब्रम्हचारिणी देवी की कृपा से सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। दुर्गा पूजा के दूसरे दिन देवी के इसी स्वरुप की उपासना की जाती है। इस देवी की कथा का सार यह है कि जीवन के कठिन संघर्षों में भी मन विचलित नहीं होना चाहिए।

मन्त्र : दधाना करपद्माभ्यामक्षमाला-कमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रम्हचारिण्यनुत्तमा॥

इस श्लोक में अनुत्तमा का अर्थ - जिनसे अधिक उत्तम कोई नहीं, ऐसे होता है। और अक्षमाला-कमण्डलू शब्द में दो वस्तू होने के कारण कमण्डलु शब्द के द्विवचन का प्रयोग है।

पूर्वजन्म में इस देवी ने हिमालय के घर पुत्री रुप में जन्म लिया था और नारदजी के उपदेश से भगवान शंकर जी को पति रुप में प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की थी। इस कठिन तपस्या के कारण इन्हें तपश्चारिणी अर्थात ब्रम्हचारिणी नाम से अभिहित किया गया। एक हजार वर्ष तक इन्होंने केवल फल-फूल खाकर बिताए और सौ वर्षों तक केवल जमीन पर रहकर शाक पर निर्वाह किया।

कुछ दिनों तक कठिन उपवास रखे और खुले आकाश के नीचे वर्षा और धूप के घोर कष्ट सहे। तीन हजार वर्षों तक टूटे हुए बिल्व पत्र खाए और भगवान शंकर की आराधना करती रहीं। इसके बाद तो उन्होंने सूखे बिल्व पत्र खाना भी छोड़ दिए। कई हजार वर्षों तक निर्जल और निराहार रह कर तपस्या करती रहीं। पत्तों को खाना छोड़ देने के कारण ही इनका नाम **अपर्णा** नाम पड़ गया।

कठिन तपस्या के कारण देवी का शरीर एकदम क्षीण हो गया। देवता, ॠषि, सिद्धगण, मुनि सभी ने ब्रम्हचारिणी की तपस्या को अभूतपूर्व पुण्य कृत्य बताया, सराहना की और कहा- हे देवी आज तक किसी ने इस तरह की कठोर तपस्या नहीं की। यह तुम्हीं से ही सम्भव थी। तुम्हारी मनोकामना परिपूर्ण होगी और भगवान चन्द्रमौलि शिवजी तुम्हें पति रुप में प्राप्त होंगे। अब तपस्या छोड़कर घर लौट जाओ। जल्द ही तुम्हारे पिता तुम्हें बुलाने आ रहे हैं।

चन्द्रघण्टा :-------------------

माँ दुर्गाजी की तीसरी शक्ति का नाम चंद्रघंटा है। नवरात्रि उपासना में तीसरे दिन की पूजा का अत्यधिक महत्व है और इस दिन इन्हीं के विग्रह का पूजन-आराधन किया जाता है। इस दिन साधक का मन **मणिपूर** चक्र में प्रविष्ट होता है।

इस देवी की कृपा से साधक को अलौकिक वस्तुओं के दर्शन होते हैं। दिव्य सुगन्धियों का अनुभव होता है और कई तरह की ध्वनियाँ सुनाई देने लगती हैं।

देवी का यह स्वरुप परम शांतिदायक और कल्याणकारी माना गया है। इसीलिए कहा जाता है कि हमें निरन्तर उनके पवित्र विग्रह को ध्यान में रखकर साधना करना चाहिए। उनका ध्यान हमारे इहलोक और परलोक दोनों के लिए कल्याणकारी और सद्गति देने वाला है। इस देवी के मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चन्द्र है। इसीलिए इस देवी को चन्द्रघण्टा कहा गया है। इनके शरीर का रंग सोने के समान बहुत चमकीला है। इस देवी के दस हाथ हैं। वे खडग और अन्य अस्त्र-शस्त्र से विभूषित हैं।

सिंह पर सवार इस देवी की मुद्रा युद्ध के लिए उद्धत रहने की है। इसके घण्टे सी भयानक ध्वनि से अत्याचारी दानव-दैत्य और राक्षस काँपते रहते हैं। नवरात्रि में तीसरे दिन इसी देवी की पूजा का महत्व है। इस देवी की कृपा से साधक को अलौकिक वस्तुओं के दर्शन होते हैं। दिव्य सुगंधियों का अनुभव होता है और कई तरह की ध्वनियाँ सुनाई देने लगती हैं। इन क्षणों में साधक को बहुत सावधान रहना चाहिए।

इस देवी की आराधना से साधक में वीरता और निर्भयता के साथ ही सौम्यता और विनम्रता का विकास होता है। इसलिए हमें चाहिए कि मन, वचन और कर्म के साथ ही काया को विहित विधि-विधान के अनुसार परिशुद्ध-पवित्र करके चन्द्रघण्टा के शरणागत होकर उनकी उपासना-आराधना करना चाहिए। इससे सारे कष्टों से मुक्त होकर सहज ही परम पद के अधिकारी बन सकते हैं। यह देवी कल्याणकारी है।

मन्त्र : पिण्डजप्रवरारुढा चण्डकोपास्त्रकेर्युता।
प्रसादं तनुते माँ चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥

कूष्माण्डा :--------------------

नवरात्र-पूजन के चौथे दिन कूष्माण्डा देवी के स्वरुप की ही उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन **अदाहत** चक्र में अवस्थित होता है।

नवरात्रि में चौथे दिन देवी को कुष्माण्डा के रुप में पूजा जाता है। अपनी मन्द, हल्की हँसी के द्वारा अण्ड यानी ब्रम्हाण्ड को उत्पन्न करने के कारण इस देवी को कुष्माण्डा नाम से अभिहित किया गया है। जब सृष्टि नहीं थी, चारों तरफ अन्धकार ही अन्धकार था, तब इसी देवी ने अपने ईषत् हास्य से ब्रम्हाण्ड की रचना की थी। इसीलिए इसे सृष्टि की आदिस्वरुपा या आदिशक्ति कहा गया है।

इस देवी की आठ भुजाएँ हैं, इसलिए अष्टभुजा कहलाईं। इनके सात हाथों में क्रमश: कमण्डल, धनुष, बाण, कमल-पुष्प, अमृतपूर्ण कलश, चक्र तथा गदा हैं। आठवें हाथ में सभी सिद्धियों और निधियों को देने वाली जप माला है। इस देवी का वाहन सिंह है और इन्हें कुम्हड़े की बलि प्रिय है। संस्कृत में कुम्हड़े को कुष्माण्ड कहते हैं इसलिए इस देवी को कुष्माण्डा।

इस देवी का वास सूर्यमण्डल के भीतर लोक में है। सूर्यलोक में रहने की शक्ति क्षमता केवल इन्हीं में है। इसीलिए इनके शरीर की कान्ति और प्रभा सूर्य की भाँति ही दैदीप्यमान है। इनके ही तेज से दसों दिशाएँ आलोकित हैं। ब्रम्हाण्ड की सभी वस्तुओं और प्राणियों में इन्हीं का तेज व्याप्त है।

अचंचल और पवित्र मन से नवरात्रि के चौथे दिन इस देवी की पूजा-आराधना करना चाहिए। इससे भक्तों के रोगों और शोकों का नाश होता है तथा उसे आयु, यश, बल और आरोग्य प्राप्त होता है। यह देवी अत्यल्प सेवा और भक्ति से ही प्रसन्न होकर आशीर्वाद देती हैं। सच्चे मन से पूजा करने वाले को सुगमता से परम पद प्राप्त होता है।

विधि-विधान से पूजा करने पर भक्त को कम समय में ही कृपा का सूक्ष्म भाव अनुभव होने लगता है। यह देवी आधियों-व्याधियों से मुक्त करती हैं और उसे सुख समृद्धि और उन्नति प्रदान करती हैं। अंतत: इस देवी की उपासना में भक्तों को सदैव तत्पर रहना चाहिए।

मन्त्र : सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदाअस्तु मे॥

स्कंदमाता :-------------------

नवरात्रि का पाँचवाँ दिन स्कंदमाता की उपासना का दिन होता है। मोक्ष के द्वार खोलने

वाली माता परम सुखदायी हैं। माँ अपने भक्तों की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करती हैं। इस देवी की चार भुजाएँ हैं। यह दायीं तरफ की ऊपर वाली भुजा से स्कन्द को गोद में पकड़े हुए हैं। नीचे वाली भुजा में कमल का पुष्प है। बायीं तरफ ऊपर वाली भुजा में वरदमुद्रा में हैं और नीचे वाली भुजा में कमल पुष्प है।

पहाड़ों पर रहकर सांसारिक जीवों में नवचेतना का निर्माण करने वालीं स्कन्दमाता। नवरात्रि में पाँचवें दिन इस देवी की पूजा-अर्चना की जाती है। कहते हैं कि इनकी कृपा से मूढ़ भी ज्ञानी हो जाता है। स्कन्द कुमार कार्तिकेय की माता के कारण इन्हें स्कन्दमाता नाम से अभिहित किया गया है। इनके विग्रह में भगवान स्कन्द बालरुप में इनकी गोद में विराजित हैं। इस देवी की चार भुजाएँ हैं।

यह दायीं तरफ की ऊपर वाली भुजा से स्कन्द को गोद में पकड़े हुए हैं। नीचे वाली भुजा में कमल का पुष्प है। बायीं तरफ ऊपर वाली भुजा में वरदमुद्रा में हैं और नीचे वाली भुजा में कमल पुष्प है। इनका वर्ण एकदम शुभ्र है। यह कमल के आसन पर विराजमान रहती हैं। इसीलिए इन्हें पद्मासना भी कहा जाता है। सिंह इनका वाहन है।

शास्त्रों में इसका पुष्कल महत्व बताया गया है। इनकी उपासना से भक्त की सारी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। भक्त को मोक्ष मिलता है। सूर्यमण्डल की अधिष्ठात्री देवी होने के कारण इनका उपासक अलौकिक तेज और कान्तिमय हो जाता है। अत: मन को एकाग्र रखकर और पवित्र रखकर इस देवी की आराधना करने वाले साधक या भक्त को भवसागर पार करने में कठिनाई नहीं आती है।

उनकी पूजा से मोक्ष का मार्ग सुलभ होता है। यह देवी विद्वानों और सेवकों को पैदा करने वाली शक्ति है। यानी चेतना का निर्माण करने वालीं। कहते हैं कालिदास द्वारा रचित रघुवंशम महाकाव्य और मेघदूत रचनाएँ स्कन्दमाता की कृपा से ही संभव हुईं।

मन्त्र : सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया।
शुभदाअस्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥

कात्यायनी :-------------------

माँ दुर्गा के छठे स्वरुप का नाम कात्यायनी है। उस दिन साधक का मन **आज्ञा** चक्र में स्थित होता है। योगसाधना में इस आज्ञा चक्र का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। नवरात्रि में छठे दिन माँ कात्यायनी की पूजा की जाती है।

इनकी उपासना और आराधना से भक्तों को बड़ी आसानी से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों फलों की प्राप्ति होती है। उसके रोग, शोक, संताप और भय नष्ट हो जाते हैं। जन्मों के समस्त पाप भी नष्ट हो जाते हैं।

कात्य गोत्र में विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन ने भगवती पराम्बा की उपासना की। कठिन तपस्या की। उनकी इच्छा थी कि उन्हें पुत्री प्राप्त हो। माँ भगवती ने उनके घर पुत्री के रुप में जन्म लिया। इसलिए यह देवी कात्यायनी कहलाईं। इनका गुण शोधकार्य है। इसीलिए इस वैज्ञानिक युग में कात्यायनी का महत्व सर्वाधिक हो जाता है। इनकी कृपा से ही सारे कार्य पूरे जो जाते हैं। यह वैद्यनाथ नामक स्थान पर प्रकट होकर पूजी गईं।

माँ कात्यायनी अमोघ फलदायिनी हैं। भगवान कृष्ण को पति रुप में पाने के लिए ब्रज की गोपियों ने इन्हीं की पूजा की थी। यह पूजा कालिन्दी यमुना के तट पर की गई थी।

इसीलिए यह ब्रजमण्डल की अधिष्ठात्री देवी के रुप में प्रतिष्ठित हैं। इनका स्वरुप अत्यन्त भव्य और दिव्य है। यह स्वर्ण के समान चमकीली हैं और भास्वर हैं। इनकी चार भुजाएँ हैं। दायीं तरफ का ऊपर वाला हाथ अभयमुद्रा में है तथा नीचे वाला हाथ वर मुद्रा में। माँ के बाँयी तरफ के ऊपर वाले हाथ में तलवार है व नीचे वाले हाथ में कमल का फूल सुशोभित है। इनका वाहन भी सिंह है।

इनकी उपासना और आराधना से भक्तों को बड़ी आसानी से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों फलों की प्राप्ति होती है। उसके रोग, शोक, संताप और भय नष्ट हो जाते हैं। जन्मों के समस्त पाप भी नष्ट हो जाते हैं। इसलिए कहा जाता है कि इस देवी की उपासना करने से परम पद की प्राप्ति होती है।

मन्त्र : चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्यादेवी दानव-घातिनी॥

कालरात्रि :-------------------

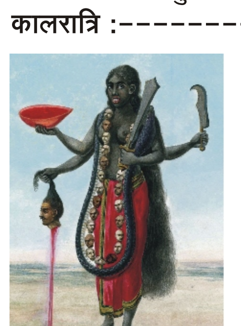

माँ दुर्गाजी की सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती हैं। दुर्गापूजा के सातवें दिन माँ कालरात्रि की उपासना का विधान है। इस दिन साधक का मन **सहस्रार** चक्र में स्थित रहता है। इसके लिए ब्रम्हाण्ड की समस्त सिद्धियों का द्वार खुलने लगता है।

कहा जाता है कि कालरात्रि की उपासना करने से ब्रम्हाण्ड की सारी सिद्धियों के दरवाजे खुलने लगते हैं और तमाम असुरी शक्तियां उनके नाम के उच्चारण से ही भयभीत होकर दूर भागने लगती हैं।

नाम से अभिव्यक्त होता है कि माँ दुर्गा की यह सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती है अर्थात जिनके शरीर का रंग घने अन्धकार की तरह एकदम काला है। नाम से ही जाहिर है कि इनका रुप भयानक है। सिर के बाल बिखरे हुए हैं और गले में विद्युत की तरह चमकने वाली माला है। अन्धकारमय स्थितियों का विनाश करने वाली शक्ति हैं कालरात्रि। काल से भी रक्षा करने वाली यह शक्ति है।

इस देवी के तीन नेत्र हैं। यह तीनों ही नेत्र ब्रम्हाण्ड के समान गोल हैं। इनकी साँसों से अग्नि निकलती रहती है। यह गर्दभ की सवारी करती हैं। ऊपर उठे हुए दाहिने हाथ की वर मुद्रा भक्तों को वर देती है। दाहिनी ही तरफ का नीचे वाला हाथ अभय मुद्रा में है। यानी भक्तों हमेशा निडर, निर्भय रहो।

बायीं तरफ के ऊपर वाले हाथ में लोहे का काँटा तथा नीचे वाले हाथ में खड्ग है। इनका रुप भले ही भयंकर हो लेकिन यह सदैव शुभ फल देने वाली माँ हैं। इसीलिए यह **शुभंकरी** कहलाईं। अर्थात इनसे भक्तों को किसी भी प्रकार से भयभीत या आतंकित होने की कतई आवश्यकता नहीं। उनके साक्षात्कार से भक्त पुण्य का भागी बनता है।

कालरात्रि की उपासना करने से ब्रम्हाण्ड की सारी सिद्धियों के दरवाजे खुलने लगते हैं और तमाम असुरी शक्तियाँ उनके नाम के उच्चारण से ही भयभीत होकर दूर भागने लगती हैं। इसलिए दानव, दैत्य, राक्षस और भूत-प्रेत उनके स्मरण से ही भाग जाते हैं। यह ग्रह बाधाओं को भी दूर करती हैं और अग्नि, जल, जन्तु, शत्रु और रात्रि भय दूर हो जाते हैं। इनकी कृपा से भक्त हर तरह के भय से मुक्त हो जाता है।

मन्त्र : एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी॥
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टकभूषणा।
वर्धन्मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयण्करी॥

महागौरी :--------------------

माँ दुर्गाजी की आठवीं शक्ति का नाम महागौरी है। दुर्गापूजा के आठवें दिन महागौरी की उपासना का विधान है। नवरात्रि में आठवें दिन महागौरी शक्ति की पूजा की जाती है। नाम से प्रकट है कि इनका रुप पूर्णत: गौर वर्ण है। इनकी उपमा शंख, चन्द्र और कुन्द के फूल से दी गई है। अष्टवर्षा भवेद् गौरी यानी इनकी आयु आठ साल की मानी गई है। इनके सभी आभूषण और वस्त्र सफेद हैं। इसीलिए उन्हें **वेताम्बरधरा** कहा गया है। इनकि चार भुजाएँ हैं और वाहन वृषभ है इसीलिए इनको **वृषारुढ़ा** भी कहा गया है।

इनके ऊपर वाला दाहिना हाथ अभय मुद्रा है तथा नीचे वाला हाथ त्रिशूल धारण किया हुआ है। ऊपर वाले बाएँ हाथ में डमरु धारण कर रखा है और नीचे वाले हाथ में वर मुद्रा है। इनकी पूरी मुद्रा बहुत शान्त है।

पति रुप में शिव को प्राप्त करने के लिए महागौरी ने कठोर तपस्या की थी। इसी कारण से इनका शरीर काला पड़ गया लेकिन तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने इनके शरीर को गंगा के पवित्र जल से धोकर कान्तिमय बना दिया। उनका रुप गौर वर्ण का हो गया। इसीलिए यह महागौरी कहलाईं।

यह अमोघ फलदायिनी हैं और इनकी पूजा से भक्तों के तमाम कल्मष धुल जाते हैं। पूर्वसंचित पाप भी नष्ट हो जाते हैं। महागौरी का पूजन-अर्चन, उपासना-आराधना कल्याणकारी है। इनकी कृपा से अलौकिक सिद्धियां भी प्राप्त होती हैं।

एक और मान्यता के अनुसार एक भूखा सिंह भोजन की तलाश में वहाँ पहुँचा जहाँ देवी उमा तपस्या कर रही होती है। देवी को देखकर सिंह की भूख बढ़ गई, लेकिन वह देवी के तपस्या से उठने का प्रतीक्षा करते हुए वहीं बैठ गया। इस प्रतीक्षा में वह काफी कमज़ोर हो गया। देवी जब तप से उठी तो सिंह की दशा देखकर उन्हें उस पर बहुत दया आ गई। उन्होने प्रभाव और प्रसन्ता से उसे भी अपना वाहन बना लिया क्योंकि वह उनकी तपस्या पूरी होने के प्रतीक्षा में स्वंय भी तप कर बैठा।

कहते है जो स्त्री माँ की पूजा भक्ति भाव सहित करती हैं उनके सुहाग की रक्षा देवी स्वंय करती हैं।

मन्त्र : श्वेते वृषे समारुढा श्वेताम्बरधरा शुचि:।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेव-प्रमोद-दा॥

इन्हें अन्नपूर्णा, ऐश्वर्य प्रदायिनी, चौतन्यमयी भी कहा जाता है। महादेव-प्रमोद-दा का अर्थ है महादेव को आनंद देनेवाली।

सिद्धिदात्री :-------------------

माँ दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री हैं। ये सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाली हैं। नवरात्र के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है। मान्यता है कि इस दिन शास्त्रीय विधि-विधान और पूर्ण निष्ठा के साथ साधना करने वाले साधक को सभी सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है। इस देवी के दाहिनी तरफ नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपर वाले हाथ में गदा तथा बायीं तरफ के नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल का पुष्प है। इनका वाहन सिंह है और यह कमल पुष्प पर भी आसीन होती हैं। नवरात्र में यह अन्तिम देवी हैं। हिमाचल के नन्दापर्वत पर इनका प्रसिद्ध तीर्थ है।

माना जाता है कि इनकी पूजा करने से बाकी देवीयों कि उपासना भी स्वंय हो जाती है। यह देवी सर्व सिद्धियाँ प्रदान करने वाली देवी हैं। उपासक या भक्त पर इनकी कृपा से कठिन से कठिन कार्य भी आसानी से संभव हो जाते हैं। अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व आठ सिद्धियाँ होती हैं। इसलिए इस देवी की सच्चे मन से विधि विधान से उपासना-आराधना करने से यह सभी सिद्धियां प्राप्त की जा सकती हैं।

कहते हैं भगवान शिव ने भी इस देवी की कृपा से यह तमाम सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। इस देवी की कृपा से ही शिव जी का आधा शरीर देवी का हुआ था। इसी कारण शिव **अर्द्धनारीश्वर** नाम से प्रसिद्ध हुए।

इस देवी के दाहिनी तरफ नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपर वाले हाथ में गदा तथा बायीं तरफ के नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल का पुष्प है।

विधि-विधान से नौंवे दिन इस देवी की उपासना करने से सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इनकी साधना करने से लौकिक और परलौकिक सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। माँ के चरणों में शरणागत होकर हमें निरन्तर नियमनिष्ठ रहकर उपासना करनी चाहिए। इस देवी का स्मरण, ध्यान, पूजन हमें इस संसार की असारता का बोध कराते हैं और अमृत पद की ओर ले जाते हैं।

मन्त्र : सिद्धगन्धर्व-यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥

गन्धर्व, यक्ष, आद्य- झ का अर्थ (स्वर्गलोकनिवासी उपदेवता गण, जिन में गन्धर्व, यक्ष, इत्यादि आद्य हैं), और असुर (राक्षस), अमर (देव) गण भी, इन सब से जिसकी सेवा होती है।

सिद्धगन्धर्व-यज्ञज्ञैरसुरैरमरैरपि यह पाठभेद भी दिखता है। यज्ञज्ञ - वह जो यज्ञों के विधान आदि जानता हो।

नव दुर्गा महत्व : ----------------

नवार्ण मंत्र : ॥ ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुडाये विच्चे॥

१. शैलपुत्री : सम्पूर्ण जड़ पदार्थ भगवती का पहला स्वरुप हैं पत्थर, मिट्टी, जल, वायु, अग्नि, आकाश सब शैल पुत्री का प्रथम रुप हैं। इस पूजन का अर्थ है प्रत्येक जड़ पदार्थ में परमात्मा को अनुभव करना।

२. ब्रम्हचारिणी : जड़ में ज्ञान का प्रस्फुरण, चेतना का संचार भगवती के दूसरे रुप का प्रादुर्भाव है। जड़ चेतन का संयोग है। प्रत्येक अंकुरण में इसे देख सकते हैं।

३. चन्द्रघण्टा : भगवती का तीसरा रुप है यहाँ जीव में वाणी प्रकट होती है जिसकी अंतिम परिणिति मनुष्य में बैखरी (वाणी) है।

४. कूष्माण्डा : अर्थात अण्डे को धारण करने वालीय स्त्री ओर पुरुष की गर्भधारण, गर्भाधान शक्ति है जो भगवती की ही शक्ति है, जिसे समस्त प्राणीमात्र में देखा जा सकता है।

५. स्कन्दमाता : पुत्रवती माता-पिता का स्वरुप है अथवा प्रत्येक पुत्रवान माता-पिता स्कन्द माता के रुप हैं।

६. कात्यायनी : के रुप में वही भगवती कन्या की माता-पिता हैं। यह देवी का छठा स्वरुप है।

७. कालरात्रि : देवी भगवती का सातवां रुप है जिससे सब जड़, चेतन, मृत्यु को प्राप्त होते हैं ओर मृत्यु के समय सब प्राणियों को इस स्वरुप का अनुभव होता है। भगवती के इन सात स्वरुपों के दर्शन सबको प्रत्यक्ष सुलभ होते हैं परन्तु आठवां ओर नौवां स्वरुप सुलभ नहीं है।

८. महागौरी : भगवती का आठवाँ स्वरुप महागौरी गौर वर्ण का है।

९. सिद्धिदात्री : भगवती का नौंवा रुप सिद्धिदात्री है। यह ज्ञान अथवा बोध का प्रतीक है, जिसे जन्म जन्मान्तर की साधना से पाया जा सकता है। इसे प्राप्त कर साधक परम सिद्ध हो जाता है। इसलिए इसे सिद्धिदात्री कहा है।

नवदुर्गा आयुर्वेद :----------------

एक मत यह कहता है कि ब्रम्हाजी के दुर्गा कवच में वर्णित नवदुर्गा नौ विशिष्ट औषधियों में हैं।

१. शैलपुत्री (हरड़) : कई प्रकार के रोगों में काम आने वाली औषधि हरड़ हिमावती है जो देवी शैलपुत्री का ही एक रुप है। यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है। यह पथया, हरीतिका, अमृता, हेमवती, कायस्थ, चेतकी और श्रेयसी ७ प्रकार की होती है।

२. ब्रम्हचारिणी (ब्राम्ही) : ब्राम्ही आयु व याददाश्त बढ़ाकर, रक्तविकारों को दूर कर स्वर को मधुर बनाती है। इसलिए इसे **सरस्वती** भी कहा जाता है।

३. चन्द्रघण्टा (चन्दुसूर) : यह एक ऐसा पौधा है जो धनिए के समान है। यह औषधि मोटापा दूर करने लाभप्रद है इसलिए इसे **चर्महन्ती** भी कहते हैं।

४. कूष्माण्डा (पेठा) : इस औषधि से पेठा मिठाई बनती है। इसलिए इस रुप को पेठा कहते हैं। इसे **कुम्हड़ा** भी कहते हैं जो रक्त विकार दूर कर पेट को साफ करने में सहायक है। मानसिक रोगों में यह अमृत समान है।

५. स्कन्दमाता (अलसी) : देवी स्कन्दमाता औषधि के रुप में अलसी में विद्यमान हैं। यह वात, पित्त व कफ रोगों की नाशक औषधि है।

६. कात्यायनी (मोइया) : देवी कात्यायनी को आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है। जैसे अम्बा, अम्बालिका व अम्बिका। इसके अलावा इन्हें मोइया भी कहते हैं। यह औषधि कफ, पित्त व गले के रोगों का नाश करती है।

७. कालरात्रि (नागदौन) : यह देवी नागदौन औषधि के रुप में जानी जाती हैं। यह सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी और मन एवं मस्तिष्क के विकारों को दूर करने वाली औषधि है।

८. महागौरी (तुलसी) : तुलसी सात प्रकार की होती है। सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरुता, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र। ये रक्त को साफ कर हृदय रोगों का नाश करती है।

९. सिद्धिदात्री (शतावरी) : दुर्गा का नौवाँ रुप सिद्धिदात्री है जिसे नारायणी शतावरी कहते हैं। यह बल, बुद्धि एवं विवेक के लिए उपयोगी है।

॥ ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुडाये विच्चे॥
॥ ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुडाये विच्चे॥
॥ ॐ एं ह्रीं क्लीं चामुडाये विच्चे॥

साभार : विकिपिडिया

रामलीला

रामलीला उत्तरी भारत में परम्परागत रुप से खेला जाने वाला राम के चरित पर आधारित नाटक है। यह प्राय: विजयादशमी के अवसर पर खेला जाता है।.

इतिहास :

समुद्र से लेकर हिमाचल तक प्रख्यात रामलीला का आदि प्रवर्तक कौन है, यह विवादास्पद प्रश्न है। भावुक भक्तों की दृष्टि में यह अनादि है। एक किंवदंति का संकेत है कि त्रेता युग में श्री रामचंद्र के वनगमनोपरांत अयोध्यावासियों ने चौदह वर्ष की वियोगावधि राम की बाल लीलाओं का अभिनय कर बिताई थी। तभी से इसकी परंपरा का प्रचलन हुआ। एक अन्य जनश्रुति से यह प्रमाणित होता है कि इसके आदि प्रवर्तक मेघा भगत थे जो काशी के कतुआपुर महल्ले में स्थित फुटहे हनुमान के निकट के निवासी माने जाते हैं। एक बार पुरुषोत्तम रामचंद्र जी ने इन्हें स्वप्न में दर्शन देकर लीला करने का आदेश दिया ताकि भक्त जनों को भगवान के चाक्षुष दर्शन हो सकें। इससे सत्प्रेरणा पाकर इन्होंने रामलीला संपन्न कराई। तत्परिणामस्वरुप ठीक भरत मिलाप के मंगल अवसर पर आराध्य देव ने अपनी झलक देकर इनकी कामना पूर्ण की। कुछ लोगों के मतानुसार रामलीला की अभिनय परंपरा के प्रतिष्ठापक गोस्वामी तुलसीदास हैं, इन्होंने हिंदी में जन मनोरंजनकारी नाटकों का अभाव पाकर इसका श्रीगणेश किया। इनकी प्रेरणा से अयोध्या और काशी के तुलसी घाट पर प्रथम बार रामलीला हुई थी।

रामलीला के प्रकार :

रंगमंचीय दृष्टि से रामलीला तीन प्रकार की हैं - सचल लीला, अचल लीला तथा स्टेज लीला।

काशी नगरी के चार स्थानों में अचल लीलाएँ होती हैं। तुलसीदास द्वारा स्थापित रंगमंच की कई विशेषताओं में से एक यह भी है कि स्वाभाविकता, प्रभावोत्पादकता और मनोहरता की सृष्टि के लिए, अयोध्या, जनकपुर, चित्रकूट, लंका आदि अलग-अलग स्थान बना दिए गए थे और एक स्थान पर उसी से संबंधित सब लीलाएँ दिखाई जाती थीं। यह ज्ञातव्य है कि रंगशाला खुली होती थी और पात्रों को संवाद जोड़ने घटाने में स्वतंत्रता थी। इस तरह हिंदी रंगमंच की प्रतिष्ठा का श्रेय गो. तुलसीदास को और इनके कार्यक्षेत्र काशी को प्राप्त है।

गोपीगंज आदि में भरतमिलाप के दिन विमान तथा लागें निकाली जाती हैं। इलाहाबाद के दशहरे के अवसर पर रामलीला के सिलसिले में जो विमान और चौकियाँ निकलती है, उनका दृश्य बड़ा भव्य होता है।

लीला के पात्र, किशोर, युवा, प्रौढ़ सभी होते हैं। सीता या सखियों की भूमिका आज तक किशोर द्वारा ही संपन्न होता है। रामलीला के सभी अभिनेता प्राय: ब्राम्हण होते हैं, किंतु अब कहीं कहीं अन्य वर्णों के भी लोग देखे जाते हैं। पात्रों का चुनाव करते समय रावण की कायिक विराटता, सीता की प्रतिगत कोमलता और वाणीगत मृदुता, शूर्पणखा की शारीरिक लंबाई आदि पर विशेष ध्यान रखा जाता है। लीलाभिनेता चौपाइयों, दोहों को कंठस्थ किए रहते हैं और यथावसर कथोपकथनों में उपयोग कर देते हैं।

रामलीला की सफलता उसका संचालन करनेवाले व्यास सूत्राघार पर निर्भर करती है, क्योंकि वह संवादों की गत्यात्मकता तथा अभिनेताओं को निर्देश देता है। साथ ही रंगमंचीय व्यवस्था पर भी पूरा ध्यान रखता है। रामलीला के प्रांरभ में एक निश्चित विधि स्वीकृत है। स्थान-काल-भेद के कारण विधियों में अंतर लक्षित होता है। कहीं भगवान के मुकुटों के पूजन से तो कहीं अन्य विधान से होता है। इसमें एक ओर पात्रों द्वारा रुप और अवस्थाओं का प्रस्तुतीकरण होता है, दूसरी ओर समवेत स्वर में मानस का परायण नारद-बानी-शैली में होता चलता है। लीला के अंत में आरती होती है।

काशी में शूर्पणखा की नाक काटे जाने के बाद खर-दूषण की सेना का जो जुलूस निकलता है उसमें जगमग करते हुए विमान तथा तरह-तरह की लागें निकलती हैं जिनमें धार्मिक, सामाजिक दृश्यों, घटनाओं की मनोरम झाकियाँ रहती हैं। साथ में काली का वेश धारण किए हुए पुरुषों का तलवार संचालन, पैतरेवाजी, शस्त्रकौशल आदि देखने लायक होता है।

रामलीला में नृत्य, संगीत की प्रधानता नहीं होती क्योंकि चरितनायक गंभीर, वीर, धीर, शालीन एवं मर्यादाप्रिय पुरुषोत्तम हैं। परिणामस्वरुप वातावरण में विशेष प्रकार की गंभीरता विराजती रहती है। इस लीला की पहले मंडली नहीं होती थी अब कुछ पेशेवर लोग मंडलियाँ बनाकर लीलाभिनय से अर्थोपार्जन करते हैं। भारत के ग्वालियर, जयपुर, इलाहाबाद आदि नगरों में इसका मूक अभिनय होता है।

पूर्वी उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले में सलेमपुर की **सांस्कृतिक संगम** संस्था द्वारा रामायण का मंचन एक नए आयाम में प्रस्तुत किया गया है। इस संस्था का उद्‍देश्य आजकल रामायण, या रामलीला के नाम से मात्र कमाई का माध्यम बनाने में भाषा की शुद्धता पर ध्यान कम देकर, अश्लीलता का प्रयोग कर समाज को भ्रमित करने वालों के विरुद्ध एक अभियान की तरह कार्य आरम्भ कर आस-पास के क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त की है। यह संस्था **रामलीला** शब्द का प्रयोग न कर रामायण मंचन के नाम से प्रस्तुति देती है, ताकि इसमें अच्छे कुलीन घर के लोग, स्त्री एवं पुरुष, दूरदर्शन व सिने कलाकार भी सम्मिलित होकर यह पुनीत कार्य कर सके। इसमें ६० कलाकार भाग लेते हैं। गायक मंडली के साथ प्रकाश एवं ध्वनि की व्यवस्था साथ लिए सोनपुर के मेले में भी विगत दो वर्षो से मेले में आकर्षण के केंद्र बने।

दर्शकों को अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों फलों की प्राप्ति होती है। रामलीला देखने से भारतेंदु हरिश्चंद्र के हृदय से रामलीला गान की उत्कंठा जगी। परिणामतरु हिंदी साहित्य को रामलीला नामक चंपू की रचना मिली।

प्रसिद्ध रामलीला-स्थल :

रामलीला का मूलाधार गोस्वामी तुलसीदास कृत **रामचरितमानस** है, लेकिन एकमात्र वही नहीं। श्री राधेश्याम कथावाचक द्वारा रचित रामायण को भी कहीं-कहीं यह गौरव प्राप्त है। ऐसे काशी की सभी रामलीला में गोस्वामी जी विरचित **मानस** ही प्रतिष्ठित है। इस लोक आयोजन के लिए वर्ष भर दो माह ही अधिक उपयुक्त माने गए हैं - आश्विन और कार्तिक। ऐसे इसका प्रदर्शन कभी भी और कहीं भी किया जा सकता है। काशी के रामनगर की लीला भाद्रपद शुक्ल चौदह को प्रारंभ होकर शरदपूर्णिमा को पूर्णता प्राप्त करती है और नक्खीघाट की शिवरात्रि से चौत्र अमावस्या अर्थात् ३३ दिनों तक चलती है। गोस्वामी तुलसीदास अयोध्या में प्रतिवर्ष रामनवमी के उपलक्ष्य में इसका आयोजन कराते थे। कहीं दिन के अपरांह काल में और कहीं रात्रि के पूर्वार्ध में इसका प्रदर्शन होता था।

काशी के रामनगर की रामलीला काशी नरेश के सामने होती थी। इसकी समाप्ति रावण के पुतले के दहन के साथ होती थी।

काशी के रामनगर की रामलीला काशी नरेश के सामने होती थी। इसकी समाप्ति रावण के पुतले के दहन के साथ होती थी।

लोकनायक राम की लीला भारत के अनेक क्षेत्रों में होती है। भारत के बाहर के भूखंडों जैसे बाली, जावा, श्री लंका आदि में प्राचीन काल से यह किसी न किसी रुप में प्रचलित रही है। जिस तरह श्रीकृष्ण की रासलीला का प्रधान केंद्र उनकी लीलाभूमि वृंदावन है उसी तरह रामलीला का स्थल है काशी और अयोध्या। मिथिला, मथुरा, आगरा, अलीगढ़, एटा, इटावा, कानपुर, काशी आदि नगरों या क्षेत्रों में आश्विन माह में अवश्य ही आयोजित होती है लेकिन एक साथ जितनी लीलाएँ नटराज की क्रीड़ाभूमि वाराणसी में होती है उतनी भारत में अन्यत्र कहीं नहीं। इस दृष्टि से काशी इस दिशा में नेतृत्व करती प्रतीत होती है। राजस्थान और मालवा आदि भूभागों में यह चौत्रमास में ससमारोह संपन्न होती है। वीर, करुण, अद्‍भुत, शृंगार आदि रसों से आप्लावित रामलीला अपना रंगमंच संकीर्ण नहीं वरन् उन्मुक्त, विराट, प्रशस्त स्वीकार करती है। कहीं भी किसी मैदान में बाँसों, रस्सियों तारों आदि से घेरकर रंगमंच और प्रेक्षागृह का सहज ही निर्माण कर लिया जाता है।

दिल्ली की रामलीला :

दिल्ली में रामलीलाओं का इतिहास बहुत पुराना है। दिल्ली में, सबसे पहली रामलीला बहादुरशाह जफर के समय पुरानी दिल्ली के रामलीला मैदान में हुई थी। लवकुश रामलीला कमेटी, अशोक विहार रामलीला, कमेटी आदि दिल्ली की प्राचीन रामलीलाओं में से हैं। राम भारतीय कला केन्द्र द्वारा रामलीला का मंचन तीन घंटों में दर्शाया जाता है। यहाँ की रामलीला में पात्रों की वेशभूषा दर्शनीय है। इनके अतिरिक्त दिलशाद गार्डन रामलीला, दिल्ली छावनी की रघुनंदन लीला समिति मयूर यूथ क्लब, मयूर विहार-१ रामलीला, सूरजमल विहार रामलीला आदि भी दिल्ली की चर्चित रामलीलाओं में से हैं।

रामलीलाओं में **छम्मिलाल ढोंढियाल** द्वारा लिखित **रामलीला** पुस्तक बहुत प्रचलित पुस्तक है। अधिकतर रामलीलाएँ इसी पुस्तक पर आधारित हैं।

दशहरा

दशहरा (विजयादशमी या आयुध-पूजा) हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। अश्विन (क्वार) मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था तथा देवी दुर्गा ने नौ रात्रि एवं दस दिन के युद्ध के उपरान्त महिषासुर पर विजय प्राप्त की थी। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रुप में मनाया जाता है। इसीलिये इस दशमी को **विजयादशमी** के नाम से जाना जाता है (दशहरा, दशहोरा, दसवीं तिथि)। दशहरा वर्ष की तीन अत्यन्त शुभ तिथियों में से एक है, अन्य दो हैं चैत्र शुक्ल की एवं कार्तिक शुक्ल की प्रतिपदा।

इस दिन लोग शस्त्र-पूजा करते हैं और नया कार्य प्रारम्भ करते हैं (जैसे अक्षर लेखन का आरम्भ, नया उद्योग आरम्भ, बीज बोना आदि)। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो कार्य आरम्भ किया जाता है उसमें विजय मिलती है। प्राचीन काल में राजा लोग इस दिन विजय की प्रार्थना कर रण-यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का आयोजन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है। दशहरा अथवा विजयदशमी भगवान राम की विजय के रुप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रुप में, दोनों ही रुपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक है, शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों- काम, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्‍प्रेरणा प्रदान करता है।

महत्व :

दशहरे का सांस्कृतिक पहलू भी है। भारत कृषि प्रधान देश है। जब किसान अपने खेत में सुनहरी फसल उगाकर अनाज रुपी संपत्ति घर लाता है तो उसके उल्लास और उमंग का पारावार नहीं रहता। इस प्रसन्नता के अवसर पर वह भगवान की कृपा को मानता है और उसे प्रकट करने के लिए वह उसका पूजन करता है। समस्त भारतवर्ष में यह पर्व विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है। महाराष्ट्र में इस अवसर पर **सिलंगण** के नाम से सामाजिक महोत्सव के रुप में भी इसको मनाया जाता है। सायंकाल के समय पर सभी ग्रामवासी सुंदर-सुंदर नव वस्त्रों से सुसज्जित होकर गाँव की सीमा पार कर शमी वृक्ष के पत्तों के रुप में **स्वर्ण** लूटकर अपने ग्राम में वापस आते हैं। फिर उस स्वर्ण का परस्पर आदान-प्रदान किया जाता है।

भारत के विभिन्न प्रदेशों का दशहरा :

दशहरा अथवा विजयदशमी राम की विजय के रुप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रुप में, दोनों ही रुपों में यह आदिशक्ति पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। देश के कोने-कोने में यह विभिन्न रुपों से मनाया जाता है, बल्कि यह उतने ही जोश और उल्लास से दूसरे देशों में भी मनाया जाता जहां प्रवासी भारतीय रहते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भाँति यहाँ भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियाँ और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर तुरही, बिगुल, ढोल, नगाड़े, बाँसुरी आदि-आदि जिसके पास जो वाद्य होता है, उसे लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूमधाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है।

पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस दौरान यहां आगंतुकों का स्वागत पारंपरिक मिठाई और उपहारों से किया जाता है। यहां भी रावण-दहन के आयोजन होते हैं, व मैदानों में मेले लगते हैं।

बस्तर में दशहरे के मुख्य कारण को राम की रावण पर विजय ना मानकर, लोग इसे मां दंतेश्वरी की आराधना को समर्पित एक पर्व मानते हैं। दंतेश्वरी माता बस्तर अंचल के निवासियों की आराध्य देवी हैं, जो दुर्गा का ही रुप हैं। यहां यह पर्व पूरे ७५ दिन चलता है। यहां दशहरा श्रावण मास की अमावस से आश्विन मास की शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है। प्रथम दिन जिसे काछिन गादि कहते हैं, देवी से समारोहारंभ की अनुमति ली जाती है। देवी एक कांटों की सेज पर विरजमान होती हैं, जिसे काछिन गादि कहते हैं। यह कन्या एक अनुसूचित जाति की है, जिससे बस्तर के राजपरिवार के व्यक्ति अनुमति लेते हैं। यह समारोह लगभग १५वीं शताब्दी से शुरु हुआ था। इसके बाद जोगी-बिठाई होती है, इसके बाद भीतर रैनी (विजयदशमी) और बाहर रैनी (रथ-यात्रा) और अंत में मुरिया दरबार होता है। इसका समापन अश्विन शुक्ल त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता है।

बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रुप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों, ओडिआ और आसाम के लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। पूरे बंगाल में पांच दिनों के लिए मनाया जाता है। ओडिशा और असम मे ४ दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बुलवा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती हैं। इसके साथ अन्य देवी द्वेवताओं की भी कई मूर्तियां बनाई जाती हैं। त्योहार के दौरान शहर में छोटे मोटे स्टाल भी मिठाईयों से भरे रहते हैं। यहां षष्ठी के दिन दुर्गा देवी का बोधन, आमंत्रण एवं प्राण प्रतिष्ठा आदि का आयोजन किया जाता है। उसके उपरांत सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी के दिन प्रात: और सायंकाल दुर्गा की पूजा में व्यतीत होते हैं। अष्टमी के दिन महापूजा और बलि भि दि जाति है। दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। प्रसाद चढ़ाया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है।

पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं, जिसे कोलाकुली कहते हैं। स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर चढ़ाती हैं, व देवी को अश्रुपूरित विदाई देती हैं। इसके साथ ही वे आपस में भी सिंदूर लगाती हैं, व सिंदूर से खेलते हैं। इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत ही शुभ माना जाता है। तदनंतर देवी प्रतिमाओं को बड़े-बड़े ट्रकों में भर कर विसर्जन के लिए ले जाया जाता है। विसर्जन की यह यात्रा भी बड़ी शोभनीय और दर्शनीय होती है।

सहारनपुर उत्तरप्रदेश मे शाकम्भरी देवी शक्तिपीठ पर भक्तों की इस दिन खूब चहल पहल होती है। पूरी शिवालिक घाटी शाकम्भरी देवी के जयकारो से गूंज उठती है यहाँ पर नवरात्रि मे भारी मेला लगता है आश्विन का मेला यहाँ बहुत बड़ा होता है और काफी किलोमीटर लंबी लाइन लगती है

तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश एवं कर्नाटक में दशहरा नौ दिनों तक चलता है जिसमें तीन देवियां लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा करते हैं। पहले तीन दिन लक्ष्मी - धन और समृद्धि की देवी का पूजन होता है। अगले तीन दिन सरस्वती- कला और विद्या की देवी की अर्चना की जाती है और अंतिम दिन देवी दुर्गा-शक्ति की देवी की स्तुति की जाती है। पूजन स्थल को अच्छी तरह फूलों और दीपकों से सजाया जाता है। लोग एक दूसरे को मिठाइयां व कपड़े देते हैं। यहां दशहरा बच्चों के लिए शिक्षा या कला संबंधी नया कार्य सीखने के लिए शुभ समय होता है। कर्नाटक में मैसूर का दशहरा भी पूरे भारत में प्रसिद्ध है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है और हाथियों का शृंगार कर पूरे शहर में एक भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीपमालिकाओं से दुलहन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभायात्रा का आनंद लेते हैं। इन द्रविड़ प्रदेशों में रावण-दहन का आयोजन नहीं किया जाता है।

गुजरात में मिट्‍टी सुशोभित रंगीन घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है और इसको कुंवारी लड़कियां सिर पर रखकर एक लोकप्रिय नृत्य करती हैं जिसे **गरबा** कहा जाता है। गरबा नृत्य इस पर्व की शान है। पुरुष एवं स्त्रियां दो छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए घूम घूम कर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर भक्ति, फिल्म तथा पारंपरिक लोक-संगीत सभी का समायोजन होता है। पूजा और आरती के बाद डांडिया रास का आयोजन पूरी रात होता रहता है। नवरात्रि में सोने और गहनों की खरीद को शुभ माना जाता है।

महाराष्ट्र में नवरात्रि के नौ दिन माँ दुर्गा को समर्पित रहते हैं, जबकि दसवें दिन ज्ञान की देवी सरस्वती की वंदना की जाती है। इस दिन विद्यालय जाने वाले बच्चे अपनी पढ़ाई में आशीर्वाद पाने के लिए मां सरस्वती के तांत्रिक चित्रों की पूजा करते हैं। किसी भी चीज को प्रारंभ करने के लिए खासकर विद्या आरंभ करने के लिए यह दिन काफी शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र के लोग इस दिन विवाह, गृह-प्रवेश एवं नये घर खरीदने का शुभ मुहूर्त समझते हैं।

कश्मीर के अल्पसंख्यक हिन्दू नवरात्रि के पर्व को श्रद्धा से मनाते हैं। परिवार के सारे वयस्क सदस्य नौ दिनों तक सिर्फ पानी पीकर उपवास करते हैं। अत्यंत पुरानी परंपरा के अनुसार नौ दिनों तक लोग माता खीर भवानी के दर्शन करने के लिए जाते हैं। यह मंदिर एक झील के बीचोबीच बना हुआ है। ऐसा माना जाता है कि देवी ने अपने भक्तों से कहा हुआ है कि यदि कोई अनहोनी होने वाली होगी तो सरोवर का पानी काला हो जाएगा। कहा जाता है कि इंदिरा गांधी की हत्या के ठीक एक दिन पहले और भारत पाक युद्ध के पहले यहाँ का पानी सचमुच काला हो गया था। दशहरा सचाई की बुराई पर जीत का प्रतीक है।

विजय पर्व :

दशहरे का उत्सव शक्ति और शक्ति का समन्वय बताने वाला उत्सव है। नवरात्रि के नौ दिन जगदम्बा की उपासना करके शक्तिशाली बना हुआ मनुष्य विजय प्राप्ति के लिए तत्पर रहता है। इस दृष्टि से दशहरे अर्थात विजय के लिए प्रस्थान का उत्सव का उत्सव आवश्यक भी है।

भारतीय संस्कृति सदा से ही वीरता व शौर्य की समर्थक रही है। प्रत्येक व्यक्ति और समाज के रुधिर में वीरता का प्रादुर्भाव हो कारण से ही दशहरे का उत्सव मनाया जाता है। यदि कभी युद्ध अनिवार्य ही हो तब शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा ना कर उस पर हमला कर उसका पराभव करना ही कुशल राजनीति है। भगवान राम के समय से यह दिन विजय प्रस्थान का प्रतीक निश्चित है। भगवान राम ने रावण से युद्ध हेतु इसी दिन प्रस्थान किया था। मराठा रत्न छत्रपती शिवाजी महाराज ने भी औरंगजेब के विरुद्ध इसी दिन प्रस्थान करके हिन्दू धर्म का रक्षण किया था। भारतीय इतिहास में अनेक उदाहरण हैं जब हिन्दू राजा इस दिन विजय-प्रस्थान करते थे।

इस पर्व को भगवती के **विजया** नाम पर भी **विजयादशमी** कहते हैं। इस दिन भगवान रामचंद्र चौदह वर्ष का वनवास भोगकर तथा रावण का वध कर अयोध्या पहुँचे थे। इसलिए भी इस पर्व को विजयादशमी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय **विजय** नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं।

ऐसा माना गया है कि शत्रु पर विजय पाने के लिए इसी समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन श्रवण नक्षत्र का योग और भी अधिक शुभ माना गया है। युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इस काल में राजाओं (महत्वपूर्ण पदों पर पदासीन लोग) को सीमा का उल्लंघन करना चाहिए। दुर्योधन ने पांडवों को जुए में पराजित करके बारह वर्ष के वनवास के साथ तेरहवें वर्ष में अज्ञातवास की शर्त दी थी। तेरहवें वर्ष यदि उनका पता लग जाता तो उन्हें पुन: बारह वर्ष का वनवास भोगना पड़ता। इसी अज्ञातवास में अर्जुन ने अपना धनुष एक शमी वृक्ष पर रखा था तथा स्वयं वृहन्नला वेश में राजा विराट के यहाँ नौकरी कर ली थी। जब गोरक्षा के लिए विराट के पुत्र उत्तर ने अर्जुन को अपने साथ लिया, तब अर्जुन ने शमी वृक्ष पर से अपने हथियार उठाकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। विजयादशमी के दिन भगवान रामचंद्रजी के लंका पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करते समय शमी वृक्ष ने भगवान की विजय का उद्‍घोष किया था। विजयकाल में शमी पूजन इसीलिए होता है।

नेपाल में विजयादशमी के दिन बड़ों के सामने नतमस्तक होकर उनका आशीर्वाद लेने की परम्परा है।

टीका टिप्पणी :

क. आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये।
स कालो विजयो ज्ञेय: सर्वकार्यार्थसिद्धये॥

ख. मम क्षेमारोग्यादिसिद्धयर्थं यात्रायां विजयसिद्धयर्थं।
गणपतिमातृकामार्गदेवतापराजिताशमीपूजनानि करिष्ये॥

ग. यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर:।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

संपादकिय

राहत का सफर

पिछले साल जब दुनिया भर में कोरोना संक्रमण ने गंभीर महामारी की शक्ल लेना शुरु कर दिया, तब तमाम देशों ने न केवल अपने यहां इससे निपटने के हर इंतजाम किए, बल्कि विदेशों में भी अपनी पहुंच के इलाकों में हर संभव मदद की।

पिछले साल जब दुनिया भर में कोरोना संक्रमण ने गंभीर महामारी की शक्ल लेना शुरु कर दिया, तब तमाम देशों ने न केवल अपने यहां इससे निपटने के हर इंतजाम किए, बल्कि विदेशों में भी अपनी पहुंच के इलाकों में हर संभव मदद की। यह वैश्विक महामारी का सामना करने के क्रम में उपजी आम मानवीयता थी, जिसकी सराहना की गई। मगर इलाज से लेकर टीकाकरण के जरिए इस महामारी को कमजोर करने के रास्ते जैसे-जैसे साफ होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे कुछ जगहों पर पनपने वाले आग्रह या शंकाएं अफसोस की वजह बन रही हैं। मसलन, कुछ समय पहले ब्रिटेन ने भारत में चल रहे टीकाकरण में कोविशील्ड को मान्यता दी थी, मगर यह शर्त लगा दी कि टीके की दोनों खुराक लेने के बावजूद वहां आने वाले भारतीय यात्रियों को दस दिन के एकांतवास में गुजारना होगा।

यह अपने आप में वैश्विकस्तर पर तय हो रहे नियमों में विरोधाभास का उदाहरण था, जिसमें एक ओर कोविड-१९ से बचाव का टीका लेने को कहीं आने-जाने के लिए अनुमति-पत्र के तौर पर देखा जा रहा है, तो दूसरी ओर टीकाकरण की दोनों खुराकों के बावजूद नए तरह के प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं। जाहिर है, यह भारत के लिए न केवल असुविधाजनक स्थिति थी, बल्कि यहां चल रहे टीकाकरण को लेकर गैरजरुरी विवाद खड़ा करने जैसा और निराधार शक पैदा करना था।

इसलिए भारत ने पहले ब्रिटेन से इस तरह के कदम पर पुनर्विचार का आग्रह किया, लेकिन इस के बाद जवाबी कार्रवाई के तौर पर यहां आने वाले ब्रिटिश यात्री के लिए समान नियम यानी दस दिन के एकांतवास की शर्त लगा दी। दोनों तरफ से उठाए गए इन कदमों की सफाई में कहा जा सकता है कि कोरोना संक्रमण को लेकर एहतियात बरतने के लिए ऐसा किया गया, मगर इस तरह के फैसले लिए जाते समय नाहक संदेह, प्रतिद्वंद्विता या शक जैसी स्थितियों के बजाय विवेक और परिपक्वता को तरजीह दी जानी चाहिए। भारत की कार्रवाई के बाद शायद ब्रिटेन को अपने रुख पर पुनर्विचार करना जरुरी लगा और उसने भारतीय यात्रियों को लेकर घोषित शर्तों को हटा दिया। इस के बाद अब भारत ने भी यहां आने वाले ब्रिटिश यात्रियों के लिए दस दिन के एकांतवास की शर्त खत्म कर दी है।

सही है कि कोरोना विषाणु के संक्रमण की तीव्रता फिलहाल कमजोर होती दिख रही है, लेकिन खतरा अभी पूरी तरह टला नहीं है। इसलिए सभी देशों की सरकारें अगर इस मसले पर अतिरिक्त सावधानी बरत रही हैं, तो यह स्वाभाविक ही है। हालांकि यह भी ध्यान रखने की जरुरत है कि महामारी से बचाव के समांतर ऐसे उपायों की ओर भी कदम बढ़ाना जरुरी है, जो आम जनजीवन को सहज बना स के और लोग सुरक्षित हालात में पहले की तरह जी सकें।

इसके लिए जरुरी है कि रोजमर्रा की आर्थिक गतिविधियों में पर्यटन सहित दूसरे सभी मोर्चों पर आवश्यक सावधानी के साथ सहजता लाई जाए। लापरवाही से बचने की जरुरत इसलिए भी है कि टीके की दोनों खुराक लेने वाले लोग भी कोरोना के नए स्वरुपों से संक्रमित हो रहे हैं। ऐसे में अगर बचाव के लिहाज से तय नियम-कायदों सहित किसी मामले में जरा-सी कोताही हुई तो वह भारी पड़ सकती है। जरुरत इस बात की है कि इससे निपटने के लिए अलग-अलग देश टीका या अन्य मसलों पर किसी प्रतिद्वंद्विता का शिकार होने के बजाय सामूहिक जिम्मेदारी के साथ काम करें और आपसी सहयोग से नया रास्ता तैयार करें।

गोरेगांववासियों की प्यास मजिप्रा के पास

योजना तैयार, लेकिन अधिकारियों का नहीं ध्यान

संवाददाता गोरेगांव – गोंदिया-गोरेगांव नगरवासियों को पुरानी जलापूर्ति योजना से ही पानी उपलब्ध किया जा रहा है। लेकिन जनसंख्या अधिक बढ़ जाने के कारण पुरानी जलापूर्ति से गोरेगांववासियों की जरुरत पूरी नहीं हो रही है। जिस कारण अधूरे पानी पर ही अपनी प्यास बुझाने पर मजबूर है। नगर पंचायत प्रशासन ने योजना तैयार कर मजीप्रा के पास मंजूरी के लिए रख दी है। लेकिन अधिकारियों की अनदेखी के कारण योजना टेबल पर ही पड़ी है। यदि इस योजना को मंजूरी मिल जाती तो, नगरवासियों के पानी की समस्या हल हो जाती।

बता दें कि, महाराष्ट्र ग्रामीण जलापूर्ति योजना (मजीप्रा) ने वर्ष २००० में कटंगी जलाशय से जलापूर्ति शुरु की है। जिसमें १६ गांवों का समावेश है। इन १६ गांवों में गोरेगांव का भी समावेश है। उस समय गोरेगांव ग्राम पंचायत हुआ करती थी। लेकिन अब नगर पंचायत होने के कारण जनसंख्या लगभग १२ हजार से अधिक तक हो गई है। जिस कारण पर्याप्त मात्रा में पानी शहरवासियों को उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। पुरानी योजना होने के कारण जगह-जगह पाईप लाईन लिकेज तथा जर्जर हो चुकी है। जिस वजह से अनेकों बार जलापूर्ति ठप हो जाती है। जिसे देखते हुए गोरेगांव नगर पंचायत के तत्कालीन नगराध्यक्ष इंजि. आशीष बारेवार तथा नपं प्रशासन ने नई जलापूर्ति योजना को मंजूरी मिलने के लिए योजना तैयार कर मंजूरी के लिए मजीप्रा के पास भेज दिया है। किंतु इस योजना को दो वर्ष बीत गए, बावजूद मंजूरी नहीं मिल पाई है।

प्रति व्यक्ति को ५५ लीटर पानी की जरुरत

इस संदर्भ में जानकारी दी गई कि गोरेगांव नगर पंचायत की जनसंख्या लगभग १२ हजार के आसपास है। प्रति व्यक्ति को ५५ लीटर प्रतिदिन पानी की आवश्यकता होती है। लेकिन जलापूर्ति पुरानी होने के कारण बड़े मुश्किल से १० से १५ लीटर ही पानी उपलब्ध हो रहा है। जिसे देखते हुए नई योजना का प्रस्ताव नपं प्रशासन द्वारा मंजूर किया गया। जिसमें कहा गया कि प्रत्येक व्यक्ति को ५५ लीटर पानी मिल सकेगा। वहीं चौबीसों घंटे नलों से पानी शुरु रहेगा। पूरे गोरेगांव शहर में लगभग ७ किमी की नई पाईप लाईन बिछाई जाएगी। इस पाईप लाईन से शहर के ढाई हजार परिवारों के घरों में नल कनेक्शन लगाए जाएगे। इस योजना का सर्वे भी औरंगाबाद की एक एजेंसी द्वारा किया जा चुका है। योजना इतनी बेहतर तैयार की गई है कि भविष्य में ५० वर्षों तक योजना से जलापूर्ति हो सकेगी। लेकिन योजना तैयार होने पर दो वर्ष से अधिक की कालावधि बीतने के कारण जिस योजना पर १६ करोड़ रुपए खर्च होने थे, अब यही योजना २५ करोड़ रुपए तक पहुंच चुकी है। अगर आलाधिकारियों ने समय पर ध्यान दिया होता तो रुपए भी बच जाते और जलापूर्ति भी शुरु हो जाती।

जिलाधिकारी के समक्ष रखा जाएगा विषय

दो वर्ष पूर्व ही गोरेगांव नगर पंचायत प्रशासन ने नई योजना तैयार कर प्रस्ताव को पारित कर दिया था। जिसे मंजूरी के लिए मजीप्रा के समक्ष रखा गया। किंतु इस ओर ध्यान न देते हुए किसी भी प्रकार का जवाब नहीं दिया गया। विधायक विजय रहांगडाले, विधायक डॉ. परिणय फुके के माध्यम से योजना निर्माण की गई। पुरानी जलापूर्ति से नगरवासियों को पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिल पा रहा है। अधिकारियों की अनदेखी का शिकार नगरवासी हो रहे हैं। इस विषय को लेकर जिलाधिकारी के समक्ष रखकर संबंधित अधिकारियों से जवाब मांगा जाएगा। यदि समय पर मंजूरी मिल जाती तो १० करोड़ रुपए शासन के बच जाते और नगरवासियों को पर्याप्त मात्रा में पानी मिल जाता।

– इंजि.आशीष बारेवार
पूर्व नगराध्यक्ष, नपं गोरेगांव

राजपूत (क्षत्रिय) समाज गोंदिया अमरसिंह राजपूत अध्यक्ष मनोनीत

गोंदिया - राजपूत (क्षत्रिय) समाज गोंदिया जिला कार्यकारिणी गठन के लिए समाजबन्धुओं की उपस्थित में एवं आदरणीय बुजुर्गों के मार्गदर्शन में समाज की सभा का आयोजन २ अक्टूबर को वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जयंती आयोजन समिति गोंदिया के कार्यालय अंगूर बगीचा रोड गोंदिया में किया गया। इस सभा में समाज के उत्थान के लिए एवं विविध सामाजिक कार्यों विशेषतह समाज भवन निर्माण के लिए चर्चा की गई। इन सभी कार्यों को क्रियान्वित करने के लिए कार्यकारणी के गठन का प्रस्ताव रखा गया। इस प्रस्ताव को वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जयंती आयोजन समिति गोंदिया ने अनुमोदित किया।

इस अवसर पर सर्वसम्मति से अमरसिंह राजपूत को अध्यक्ष पद के लिए मनोनीत किया गया एवं उन्हे जिला कार्यकारिणी गठित करने एवं जिले की ८ तहसीलो के शहरो व ग्रामों में पदाधिकारियों की नियुक्ति करने का अधिकार दिया गया। अमरसिंह राजपूत द्वारा विजयादशमी के पावन पर्व पर शस्त्र पूजन के उपरांत पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र दिया जाएगा। शस्त्र पूजन का आयोजन वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जयंती आयोजन समिति गोंदिया के कार्यालय मे आयोजित किया गया है।

गणेश नगर क्रिकेट कोचिंग कैंप २१ अक्टूबर से

गोंदिया – विदर्भ क्रिकेट एसोसिएशन से मान्यता प्राप्त गोंदिया डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन व गणेश नगर क्रिकेट एकेडमी के संयुक्त तत्वधान में नगर परिषद स्कूल गणेश नगर में क्रिकेट कोचिंग कैंप का आयोजन २१ अक्टूबर से किया जाएगा। यह कैंप प्रतिदिन सुबह ६.३० से ८.३० तक आयोजित होगा। जिसमें सभी उम्र के खिलाड़ी शामिल हो सकते हैं। खिलाड़ियों को प्रशिक्षण नागपुर के मजूमदार क्रिकेट एकेडमी के कोच अमोल झनके, मनोज दांडे, वीसीए कोच मुकेश बाराई, राजू लिमये, नरसिंह गहरवार, अनिल सहारे, कार्तिक तुरकर, कुणाल टांडेकर व नियाज शेख देंगे। आयोजन समिति में नप बांधकाम सभापति राजकुमार कुथे मुख्य संरक्षक, सचिन शेंडे, रवि आर्य, प्रकाश अगड़े, जितेंद्र बबली गौर, मनीष छार, अंकुश मानकर, विनोद रहमतकर, सुभाष मेनन, मिलन लिल्हारे, शैलेश नरडे, पुष्पक जसानी, अजय गौर, अशोक यादव व अन्य का समावेश है। कोचिंग कैंप में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को जिला टीम में चयन के लिए प्राथमिकता दी जाएंगी व विभिन्न प्रतियोगिताओं में खेलने का अवसर प्राप्त होगा। ऐसी जानकारी मुकेश बाराई सचिव गोंदिया डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा दी गई।

आवश्यकता है

गौशाला में गौ-सेवा के कार्य करने हेतु अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता है। रहने व खाने की व्यवस्था के साथ ही योग्यतानुसार वेतन दिया जायेगा। इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें...

बुलंद गोंदिया कार्यालय
जगन्नाथ मंदिर के पास, गौशाला वार्ड, गोंदिया
मो. : 9405244668, 7670079009
समय : दोपहर 12 से संध्या 5 बजे तक

श्री सांई दुर्गा उत्सव समिति द्वारा महाआरती व लक्की ड्रा संपन्न

गोंदिया – शारदीय नवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष में श्री सांई दुर्गा उत्सव समिति, पंचवटी देवस्थान, मढ़ी चौक, गोंदिया द्वारा प्रतिवर्षानुसार दुर्गा नवमी के दिन की जाने वाली महाआरती का आयोजन इस वर्ष दिनांक १४ अक्टूबर को नियमानुसार किया गया। जिसमें ७९ महिलाओं ने माँ दुर्गा की महाआरती में भाग लिया। समिति द्वारा आरती में भाग लेने वाली महिलाओं के प्रोत्साहनार्थ लक्की ड्रा का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। इस बार के लक्की ड्रा की विशेषता यह रही कि विगत ३ वर्षों से प्रथम पुरस्कार माँ दुर्गा की सेवा व आरती पूजा पाठ में नियमित रुप से शामिल होने वाले चावला परिवार को प्राप्त हुआ। प्रथम पुरस्कार दीपाली चावला, द्वितीय पुरस्कार निकिता मूलचंदानी, तृतीय पुरस्कार मुस्कान बुधवानी व प्रोत्साहन पुरस्कार दिव्या दीवानी, साक्षी सांवरे, जया झाड़े, माधुरी लारोकर, त्रिवेणी अगड़े व त्रिशिका केवट को प्राप्त हुआ।

इस वर्ष समिति ने अपने कार्यकर्ताओं के उत्साह को देखते हुए उनका भी मोमेंटो देकर सम्मान किया। जिसमें प्रमुख रुप से विशाल सारंगपुरे, तुषार कारमेघे, अक्षय केवट, अनिल खोब्रागडे, अरुण दादुरिया, मोटूमल चुगवानी, सतीश आंबेडारे, अनूप थावरानी, अनमोल राऊत (मुका), अनिल आंबेडारे, हरेश डुसेजा (कारा), स्वप्निल तरवरे, विनय डोडवानी, देवांशु आष्टिकर, शुभम शेरके, लक्की चौरागड़े, सचिन मस्करे, अनिल चिल्हारे (मामा), अन्नु चावला, ललित अतकरे, सुमित भेलावे, अर्पित लोनारकर, हेमंत लिमजे, गोलू पटीये, आशीष केसरवानी, चंदू कोसरकर, करण कनौजिया, प्रथम वलेछा, चेतन पीपलशेंडे, अनुराग लारोकर, अभय चेन्ने, सुधीर शेरके, अभिषेक बुरांडे, विशाल सोनपुरे, अभिषेक भुते, प्रवीण कोहाने व सोनू कनौजिया रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंकज यादव ने की व मंच पर अध्यक्ष अनिल ककवानी व प्रमुख अतिथि राम सनपाल उपस्थित रहे।

संचालन खेमा भोजवानी व अनूप थावरानी ने किया। कार्यक्रम अध्यक्ष पंकज यादव ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि, जिसने मातारानी की जितनी भक्ति की उसे उसके अनुसार मातारानी ने इनाम दिया। जिन्हें ईनाम प्राप्त नहीं हुआ उसे उनकी भक्ति के अनुसार मातारानी ने आशीर्वाद दिया। साथ ही कार्यकर्ताओं व नगरवासियों को नवरात्रि दशहरा व दीपावली के लिए शुभकामनाएं दी। माँ की मुर्ती का श्रृंगार सुधीर अगळे द्वारा किया गया।

इलाज के लिए खेती बेची लेकिन नहीं बच पाए माता-पिता

तीनों भाई-बहन हो गए अनाथ। बीड़ी बनाकर कर रहे गुजर-बसर। अनाथों को आधार की जरुरत

संवाददाता – इसे कुदरत का कहर कहें या बच्चों की बदकिस्मती। अपने माता-पिता की जान बचाने इलाज के लिए खेती, गहने बेच दिए किंतु माता-पिता की जान नहीं बच पाई। अब तीनों भाई-बहन अनाथ हो गए। जिंदगी जीने के लिए बीड़ी बनाकर अपना गुजर-बसारा कर रहे है। यह कोई कहानी नहीं, बल्कि गोंदिया जिले के गोरेगांव तहसील अंतर्गत बोटे ग्राम की घटना है। अनाथ हुए बच्चों के नाम प्रणव सुरेंद्र सहारे (१६), प्रिया सुरेंद्र सहारे (१८) व साक्षी सुरेंद्र सहारे (२०) बताया गया है।

इस संदर्भ में जानकारी दी गई कि बोटे निवासी सुरेंद्र सहारे अपनी खेती कर अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। किंतु कोरोना काल में वह बीमार हो गया। घर में इलाज के लिए पैसा नहीं होने के कारण सुरेंद्र की पत्नी तथा तीनों भाई-बहनों ने निर्णय लिया कि किसी भी हालत में पिता को बीमारी से बचाना है और इलाज के पैसे के लिए अपनी खेती व गहने बेच दिए। लेकिन पिता की जान नहीं बच पाई। इस घटना के बाद सुरेंद्र की पत्नी ने भी गत १५ दिन पूर्व दम तोड़ दिया। इस घटना से तीनों भाई-बहनों के सिर से माता-पिता का साया उठ गया। जिस कारण उनके समक्ष आगे का जीवन जीने के लिए समस्या निर्माण हो गई। क्योकि तीनों भाई-बहनों के पास कमाई का कोई साधन नहीं था। लेकिन तीनों भाई-बहनों ने अपनी भूख मिटाने बीड़ी बनाने का सहारा लिया। तीनों भाई-बहन बीड़ी बनाकर दो वक्त की भूख मिटा रहे है। इस तरह का संकट सुरेंद्र के परिवार पर आन पड़ा है।

तीनों भाई-बहन शिक्षा में हौनहार

प्रणय कक्षा ११वीं में अध्ययनरत है। प्रिया बी.एससी., बीएड. की शिक्षा प्राप्त कर रही है। वहीं साक्षी बी.ई. द्वितीय वर्ष की छात्रा है। लेकिन अनाथ हो जाने के कारण आगे की शिक्षा प्राप्त करना उनके लिए कठीन हो गया है। फिर भी तीनों भाई-बहनों ने हार न मानते हुए बीड़ी बनाकर अपनी पढ़ाई जारी रखने का निर्णय लिया है। लेकिन यह निर्णय उनके लिए किसी चुनौती से कम नहीं है।

अनाथों की माँ सविता का मिला आधार

घटना की जानकारी मिलते ही प्रख्यात अनाथों की माँ के नाम से पहचाने जानेवाली डॉ. सविता बेदरकर मदद के लिए दौड़ पड़ी। डॉ. सविता बेदरकर तीनों भाई-बहनों से मिलकर उनकी परिस्थिती जानी और एक क्विंटल चावल, तुअल दाल, नगद राशि सहित अन्य सामग्री मदद के तौर देकर उनका हौसला बढ़ाया। इस दौरान उनके साथ बोटे ग्राम पंचायत के सरपंच उत्तम कटरे, प्रफुल धमगाये आदि उपस्थित थे।

माँ दुर्गा की पूजा को उमड़ा झाड़े कुणबी समाज

गोंदिया – नवरात्र के दिन इंगले चौक पर माँ दुर्गा का पूजन किया गया। शहर के विभिन्न मंदिरों सहित इंगले चौक में माँ दुर्गा की पूजा-अर्चना अध्यक्ष चंद्रकुमार चुटे, सचिव नीलेश चुटे झाड़े कुणबी संघटन द्वारा की गई। इंगले चौक सार्वजनिक दुर्गा उत्सव समिति में श्री दुर्गा पूजा महोत्सव उल्लास के साथ मनाया गया। झाड़े कुणबी संघटन गोंदिया जिल्हे के द्वारा इंगले चौक पर शाम को पूजा-अर्चना कर माँ दुर्गा का आहवान किया गया। इस मौके पर सचिव नीलेश (निलु) चुटे, उपाध्यक्ष शिक्षिका दीप्ति तवाडे, सहसचिव सुजाता बहेकार, कुंदा दोनोडे, राजेश हुकरे, एड़ प्रमोद फुंडे, उमेश मेंढे, एड़ वसंत चुटे, सुरेश बहेकार, चंद्रभान तारोने, कनक दोनोडे, तेजस येटरे, उषा येटरे, शशि फुंडे, मीनाताई पाथोडे, उमेश्वरी चुटे सहित झाड़े कुणबी समाज के लोग मौजूद रहे। वहीं सिविल लाइन स्थित इंजन शेड में भी माता की पूजा-अर्चना कर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

झाड़े कुणबी समाज के सचिव नीलेश (निलु) चुटे ने बताया कि कोरोना के कारण इस बार कार्यक्रम में लिमिडेड लोगो को बुलाया, लेकिन हमारी संस्कृति से जुड़े कार्यक्रमों को फेसबुक पर साझा किया जाएगा। इस मौके पर इंगले चौक सावर्जनिक दुर्गा उत्सव मंडल के संयोजक व नगर परिषद अध्यक्ष अशोक इंगले, चंद्रभान तारोने सदस्यों द्वारा समाज के लोगों को माता की चुनरी भेंट दी गई।

वंचित बहुजन देगा प्रतिमाह २ हजार रुपए

इस संदर्भ में वंचित बहुजन आघाड़ी के जिलाध्यक्ष प्रा. सतिश बंसोड ने जानकारी देते हुए बताया कि तीनों अनाथ भाई-बहनों की जानकारी मिलते ही उनके घर पहुंचकर उनकी व्यथा सुनी। उनकी परिस्थिती बहुत ही नाजुक बनी हुई है। लेकिन उनके हौसले इतने बुलंद है वे आगे की पढ़ाई करना चाहते है। उनकी पढ़ाई में कोई कमी न आए इसलिए वंचित बहुजन आघाडी की ओर से निर्णय लिया गया है कि प्रतिमाह उन्हें २ हजार रुपए की मदद दी जाएगी। वहीं बी.ई. की फीस के लिए उन्हें नगद राशि भी दे दी गई है। जब तक उनकी पढ़ाई जारी रहेगी तब तक उन्हें प्रतिमाह आर्थिक मदद की जाएगी। इस अवसर पर शहर अध्यक्ष विनोद मेश्राम, गोरेगांव तहसील अध्यक्ष भागर्व वाघमारे, सचिव रामकुंवर नंदेश्वर, महिला आघाडी जिला महासचिव अनिता जांभुलकर, तहसील अध्यक्ष माया जांभुलकर आदि उपस्थित थे।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल द्वारा बुलंद गोंदिया साप्ताहिक समाचार पत्र भवानी प्रिंटींग प्रेस, गुरुनानक वार्ड, गोंदिया, ता.जि.गोंदिया से मुद्रित व बुलंद गोंदिया भवन, जगन्नाथ मंदिर के पास गौशाला वार्ड, गोंदिया ४४१६०१, ता.जि.गोंदिया से प्रकाशित। संपादक : संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल, मो.क्र. ९४०५२४४६६८। (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार) प्रकाशित किये गये समाचार व लेख से संपादक सहमत है ऐसा नहीं है। न्यायालय क्षेत्र गोंदिया।